गायत्री परिवार के
लिए वर्ष 2026 इतना
महत्वपूर्ण क्यों है ?
— श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री परिवार के लिए वर्ष 2026 इतना महत्वपूर्ण क्यों है ?

गायत्री परिवार परिवार का शायद ही कोई सदस्य हो जो वर्ष 2026 के महत्व से परिचित न हो। युगतीर्थ शांतिकुंज से पिछले एक वर्ष से इस महान पर्व के बारे में, "ज्योति कलश की दिव्यता"   के बारे में बताया जा रहा है।

परम पूज्य गुरुदेव के तप साधना के 100 वर्ष, परम वंदनीय माता जी के अवतरण के 100 वर्ष एवं अखंड दीप के प्राकट्य के 100 वर्ष, अलग-अलग दिखने वाले ये तीन घटनाक्रम ठीक वैसे ही एक हैं, जैसे गंगा-यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी, प्रयाग में एक धारा हो जाती हैं।

फ़रवरी 2025 की अखंड ज्योति में प्रकाशित हुए दो दिव्य लेख, इस लेख की आधारशिला बना रहे हैं। पहले लेख का शीर्षक "ज्योति अब ज्वाला बनेगी" और दूसरे लेख का शीर्षक "अविस्मरणीय,अद्भुत एवं अलौकिक कार्यक्रमों की श्रृंखला" , दोनों ही अपने अंदर वह ज्वाला लेकर आये हैं कि जिन्होंने भी इन लेखों का पहले अमृतपान किया है, इस लेख को पढ़े बिना रह नहीं पायेंगें, ऐसा हमारा अटूट विश्वास है। इस अटूट विश्वास का आधार वोह दिव्य कंटेंट है जो इन लेखों में समाहित है। श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव

पंड्या जी ने इन लेखों के संपादन में जिस दिव्यता का प्राकट्य किया है, उसके लिए हम नतमस्तक हैं।

आने वाले समय में शतशताब्दी को समर्पित यह महत्वपूर्ण कंटेंट पाठकों के ह्रदय में एक विशेष स्थान बनाये रखे, ऐसी हम कामना करते हैं।

ज्योति अब ज्वाला, बनेगी

"पिछले पचास वर्ष से हम दोनों 'दो शरीर एक प्राण बनकर नहीं, बल्कि एक ही सिक्के के दो पहलू बनकर रहे हैं । शरीरों का अंत तो सभी का होता है लेकिन हम लोग वर्तमान वस्त्रों को उतार देने के उपरांत भी अपनी सत्ता में यथावत् बने रहेंगे और जो कार्य सौंपा गया है, उसे तब तक पूरा करने में लगे रहेंगे, जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती ।

युग परिवर्तन एक लक्ष्य है, जनमानस का परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन उसके दो कार्यक्रम | अगली शताब्दी इक्कीसवीं सदी अपने गर्भ में उन महती संभावनाओं को सँजोए हुए है, जिनके आधार पर मानवीय गरिमा को पुनर्जीवित करने की बात सोची जा सकती है। दूसरे शब्दों में इसे वर्तमान विभीषकाओं का आत्यंतिक समापन करने वाला सार्वभौम कायाकल्प भी कह सकते हैं। इस प्रयोजन के लिए हम दोनों की साधना, मनु और शतरूपा जैसी, वसिष्ठ और अरुंधती स्तर की चलती रही है और यथावत् चलती रहेगी ।"

"ज्योति फिर भी बुझेगी नहीं, अखण्ड ज्योति, पृ. - 29-30, जनवरी - 1988

अखण्ड ज्योति की दैवी ऊर्जा से अनुप्राणित पृष्ठों पर 1988 में लिखे गए उपरोक्त वाक्य, 36 वर्ष पूर्व जब पूज्य गुरुदेव की कलम से क्रांतिरूप में प्रवाहित हुए तो वो समय उनकी सूक्ष्मीकरण साधना का समय था। साधना चरम पर थी, लेखनी ज्वाला का रूप ले चुकी थी, गायत्री परिवार मत्स्यावतार के रूप में विश्व-वसुधा को अपने अंदर समेटने के लिए व्यग्र नजर आ रहा था और इन्हीं उल्लेखनीय घटनाक्रमों के बीच पूज्य गुरुदेव धीरे-धीरे अपनी भौतिक शरीर यात्रा को समेटते हुए भी नजर आ रहे थे ।

गायत्री परिजनों को न चाहते हुए भी अनुभूति हो रही थी कि गुरुदेव अपनी लौकिक यात्रा समेट लेंगे। जो परिजन उस सत्य से परिचित होते हुए भी अपरिचित थे, उनके लिए परमपूज्य गुरुदेव ने इसी लेख में आगे लिखा भी कि "शरीर-परिवर्तन की वेला आते ही यों तो हमें साकार से निराकार होना पड़ेगा लेकिन क्षण भर में ही उस स्थिति से अपने को उबार लेंगे और दृश्यमान प्रतीक के रूप में उसी अखंड दीपक की ज्वलंत ज्योति में समा जाएँगे, जिसके आधार पर "अखण्ड ज्योति नाम"   से संबोधन अपनाया गया है। शरीरों के निष्प्राण होने के उपरांत जो चर्मचक्षुओं से हमें देखना चाहेंगे, वे इसी अखण्ड दीप की जलती लौ में एवं अखंड ज्योति के पन्नों में हमें देख सकेंगे।'

जिन परिजनों के भीतर, इन शब्दों के पीछे संदेश को समझ पाने की सामर्थ्य है, वे पूज्य गुरुदेव के इशारे का अनुमान लगा सकते हैं कि

अखंड दीप की अखण्ड ज्योति, जो वातावरण को विषाक्तता से त्रस्त इस वसुंधरा पर दैवी शक्तियों एवं ऋषि चेतना की उपस्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण मानी जा सकती है ,वह स्वयं गुरुसत्ता की उपस्थिति का साक्षात् प्रतीक है।

यह मात्र एक संयोग नहीं है कि 15 वर्ष की आयु में प्रकाश पुंज के रूप में जब गुरुवर को उनकी अलौकिक मार्गदर्शक सत्ता के दर्शन हुए तो उन्होंने उन्हें अखंड घी के दीप की स्थापना एवं उसी अखंड दीप के प्रत्यक्ष सान्निध्य में महापुरश्चरणों की श्रृंखला को संपन्न करने का निर्देश प्रदान किया ।

अक्सर लोग गुरुओं को ढूंढते, मारे-मारे फिरते रहते हैं लेकिन पूज्य गुरुदेव जैसे सुपात्र को ढूँढ़ते हुए उनके गुरु ही उनके पास पहुँचे थे।

पूज्य गुरुदेव ने इस क्षण को "सौभाग्य का सूर्योदय"   कहकर पुकारा,सच में वह स्थिति हम सबके सौभाग्य का सूर्योदय था, युगनिर्माण योजना के अविस्मरणीय विस्तार का बीजारोपण था और जिस अखंड दीपक के सान्निध्य में यह सब घटा था, हम सब गायत्री परिवारजन उसी अखंड दीपक के प्राकट्य की शताब्दी को वर्ष 2026 में मनाने जा रहे हैं ।

गणना करने वालों के लिए सौभाग्यों की श्रृंखला में यह एक ऐसा सौभाग्य होगा, जिसका साक्षी बन पाने का अवसर सहस्रों जन्मों के पुण्योदय पर ही मिलता है- पहले नहीं ।

सन् 2026 में परमपूज्य गुरुदेव की तप साधना के एवं परम वंदनीया माताजी के इस धरा धाम पर अवतरण के 100 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। विगत 100 वर्ष गायत्री परिवार की अलौकिक यात्रा के इतिहास में कुछ ऐसे रहे हैं, जिनके विषय में लिखते हुए स्याही कम पड़ जाएगी लेकिन पृष्ठ तब भी कम पड़ने वाले हैं।

आँवलखेड़ा स्थित पूजा की कोठरी से प्रारंभ हुई यात्रा देखते-देखते एक विश्वव्यापी आध्यात्मिक आंदोलन में परिवर्तित हो गई। बीज देखते-देखते विशाल वृक्ष में बदल गया । इस अवधि में ईंटों ने इमारत का, शब्दों ने शास्त्र का और पुकार ने गूँज का रूप ले लिया ।

अब समय आ गया है कि विस्तार को समग्रता दी जाये । इमारत खड़ी हो जाने के बाद शिल्पकार यह देखता है कि कहीं सीमेंट लगना शेष तो नहीं रह गया,कोई कोना बिना रंग-रोगन के, पेंट के नजर आता है तो उसे रँगने-भरने का काम समग्रता देने की दृष्टि से किया जाता है। बस, कुछ ऐसी ही जिम्मेदारी अब हमारे कंधों पर आई है। पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी की योजना की परिधि में मात्र हरिद्वार नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व आता है।

"इसीलिए पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त योजना का नाम युग निर्माण योजना है, हरिद्वार, उत्तराखंड या भारत निर्माण योजना नहीं ।"

ये कार्य हमारी जिम्मेदारी में आया है कि जहाँ-जहाँ तक पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी के विचारों की गूँज पहुँचनी शेष रह गई है, हम उसे वहाँ-वहाँ तक उसे पहुँचाने वाले बन जाएँ, ठीक वैसे ही, जैसे इमारत को अंतिम स्वरूप, "फाइनल टच" देने वाला शिल्पकार यह सुनिश्चित करता है कि कहीं कोई कोना बिना रंग-रोगन के, बिना सीमेंट के रह तो नहीं गया ।

परम वंदनीया माताजी और अखंड दीपक दो विभिन्न चेतनाओं के नाम नहीं हैं बल्कि एक ही चेतना का नाम है। परिजनों को स्मरण होगा कि वर्ष 1971 में परम पूज्य गुरुदेव मथुरा में विदाई संदेश देकर अखंड दीपक को परम वंदनीया माताजी के दिव्य संरक्षण में सुरक्षित रखकर हिमालय यात्रा पर निकल गए थे । उसका अर्थ ही यह था कि दोनों : चेतनाएँ अभिन्न हैं ।

हर गायत्री परिजन को यह स्मरण रख लेना चाहिए कि पूज्य गुरुदेव की तप साधना के 100 वर्ष, अखंड दीपक के प्राकट्य के 100 वर्ष एवं परम वंदनीया माताजी के अवतरण के 100 वर्ष, अलग-अलग दिखने वाले ये तीन घटनाक्रम ठीक वैसे ही एक हैं, जैसे गंगा-यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी, प्रयाग में एक धारा हो जाती हैं।

इस दृष्टि से वर्ष 2026, हर गायत्री परिजन के लिए एक आवाहन लेकर उपस्थित होने वाला है और वो आवाहन यह कि हम गुरुसत्ता के पावन प्रकाश को विश्व के घर-घर तक पहुँचा सकें। जब पूज्य गुरुदेव ने अखण्ड ज्योति को लिखना आरंभ किया था तो अनेकों गणमान्यों ने उनको निरुत्साहित करने का कार्य किया और यह

कहना आरंभ किया कि कैसे ये आर्थिक दृष्टि से आत्मघात के समान है। उन्हें प्रत्युत्तर देने के स्थान पर पूज्य गुरुदेव ने अखण्ड ज्योति में ही लिखा कि

"यह ज्योति अगर इंसान की जलाई हुई होगी तो बुझ जाए और यदि यह ईश्वर की जलाई हुई होगी तो अखंड जलेगी।" सत्य ये ही है।

उनकी जलाई हुई ज्योति न केवल जलती रहेगी, बल्कि और प्रचंड होगी । पूज्य गुरुदेव ने वर्ष 1988 की जनवरी की अखण्ड ज्योति में लिखा भी था कि

"हमारी ज्योति और फैलेगी। मिशन तीर की तरह सनसनाता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेगा।"

कहने का अभिप्राय स्पष्ट है कि हमारा दायित्व अखण्ड ज्योति को और प्रचंड बनाने का है। यह सौभाग्यशाली समय हर गायत्री परिजन के लिए एक ही पुकार लेकर उपस्थित हुआ है कि वे युगसृजेताओं की पंक्ति में अपना नाम सबसे आगे लिखा सकें। सौभाग्य का प्रवाह उमड़ रहा है, क्रांति की ज्वाला दीप्तिमान है, भावनाशीलों को पुकारा गया है, जिन्हें महाकाल की पुकार सुनाई पड़ती हो, वो चुप न बैठें, आगे आएँ और समाज को अभिनव दिशा दिखाने का प्रयत्न करें। अखण्ड ज्योति की प्रचंड ज्वाला क्रांतिदूतों को पुकार रही है कि वो उस मशाल को हाथ देने वाले बन सकें, जिसे स्पर्श करने का सौभाग्य भी सौभाग्यशालियों को ही मिलता है।

परमपूज्य गुरुदेव की शतवर्षीय अर्थात 100 वर्षीय (1926-2026) तप-साधना की ये घड़ी, अखण्ड ज्योति को प्रचंड ज्वाला में बदलने की घड़ी है। नई उमंगों की, प्रेरणाओं की, प्रकाश के अवतरण की घड़ी है ।

पूज्य गुरुदेव ने कहा था कि अखंड दीपक के प्राकट्य के साथ उनके जीवन में सौभाग्य की तरंग आई। 12 फरवरी, 1978 के अपने क्रांतिकारी उद्बोधन में पूज्य गुरुदेव ने कहाः

"मैं चाहता हूँ कि जो सौभाग्य की धारा और लहर मेरे पास आई थी, काश! आपके पास भी आ जाती तो आप धन्य हो जाते। जब आती है हूक, जब आती है उमंग तो फिर क्या हो जाता है ? रोकना मुश्किल हो जाता है और जो आग उठती है, ऐसी तेजी से उठती है कि इंतजार नहीं करना पड़ता। जब वक्त आता है तो आंधी तूफ़ान के तरीके से आता है।"

वर्ष 2026 की घड़ी वैसे ही आँधी-तूफान के तरीके से हर गायत्री परिजन के जीवन में आई है। इस वर्ष को ध्यान में रखकर पिछले 2 वर्षों से ज्योति कलश यात्राएँ भारत के समस्त राज्यों से लेकर भारत से बाहर भी सिंगापुर, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका इत्यादि विभिन्न देशों में प्रेरणादायी पुरुषार्थ के साथ संपन्न हो रही हैं।

ज्योति कलश यात्रा के माध्यम से सम्पन्न हुई जनजागरण की परीक्षा को पूर्ण कर लेने के उपरांत अब दूसरे महत्त्वपूर्ण चरण में प्रवेश का क्रम सम्पन्न किया जाना है। यह मात्र एक संयोग नहीं है कि पूज्य गुरुदेव की शतवर्षीय तप-साधना का प्रारंभ अखंड घृत-दीप की

पावन उपस्थिति में प्रकट हुआ। उनकी मार्गदर्शक सत्ता द्वारा उनको गायत्री महाशक्ति के चौबीस वर्ष के 24 महापुरश्चरण एवं समय-समय पर क्रमबद्ध मार्गदर्शन के लिए हिमालय यात्रा का निर्देश प्रदान किया ।

गायत्री मंत्र के 24 अक्षर, गायत्री माता की 24 शक्तिधाराएँ, विश्वविख्यात हैं। विश्वामित्र तंत्र में कहा गया है: चतुर्विंशतिसाहस्त्रं महाप्रज्ञा मुखं मतम् । चतुर्विंशक्ति शवे चैतु ज्ञेयं मुख्यं मुनीषिभिः अर्थात महाप्रज्ञा के 24,000 प्रधान नाम हैं और उनमें से भी 24 को अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है ।

परम पूज्य गुरुदेव ने इन 24 शक्तिधाराओं को हरिद्वार स्थित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के प्रथम तल पर शक्तिपुंज के रूप में प्रतिष्ठित किया। इन शक्तिधाराओं के नाम निम्नलिखित हैं : आदिशक्ति ब्राह्मी, वैष्णवी, शांभवी,वेदमाता,देवमाता, विश्वमाता, ऋतंभरा, मंदाकिनी, अजपा, ऋद्धि-सिद्धि, वैदिकी, सावित्री, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, कुंडलिनी, प्राणाग्नि,भवानी, भुवनेश्वरी,अन्नपूर्णा,महामाया,पयस्विनी और त्रिपुरा शक्तिधाराओं को

न यह संयोग था कि गायत्री मंत्र के 24 अक्षर पूज्य गुरुदेव की साधना के 24 महापुरश्चरणों का आधार बने और न यह संयोग है कि वर्ष 2026 के बाद इस सदी के पूर्वार्द्ध (21वीं सदी का प्रथम Half-2050) में ठीक 24 ही वर्ष शेष हैं। सन् 1926 से वर्ष 2050 के 24 वर्षों ने विश्व की भौगोलिक रूपरेखा को परिवर्तित करने का कार्य किया

था तो यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगा कि यह 24 वर्ष (2026 से 2050) विश्व की आध्यात्मिक रूपरेखा को लिखने का आधार बनने वाले हैं ।

कहने का अर्थ स्पष्ट है कि अखण्ड ज्योति को प्रचंड ज्वाला में परिवर्तित करने के लिए 24 वर्षीय सामूहिक तपोनुष्ठान का संकल्प अनिवार्य हो गया है।

वर्तमान युग में संघ-शक्ति का ही बोलबाला/प्रभाव है । अन्य युगों में शरीरबल, धनबल, मनोबल आदि से भी आवश्यक लक्ष्य का समाधान हो जाता था लेकिन इस युग में संघ-शक्ति ही वह साधन है जिसके द्वारा सामूहिक उद्देश्यों को पूर्ण किया जाना संभव है। इसीलिए तो कहा गया है Union is strength. वैदिक काल में देवासुर संग्राम में परास्त होने पर ब्रह्मा जी ने माँ दुर्गा को सब देवताओं की संघ-शक्ति के रूप में उत्पन्न किया था। रावण के समय में असुरता का शमन करने के लिए ऋषियों के रक्तघट से माँ सीता का जन्म हुआ था ।

वर्तमान समय की विषाक्तता का शमन भी एक ऐसे ही 24 वर्षीय संघ-शक्ति के आध्यात्मिक प्रयोग से संभव है और इस हेतु यह आवश्यक समझा जा रहा है कि जिस तरह माँ गायत्री के पंचमुख, पंचकोश, गायत्री साधना का मूलाधार हैं, उसी तरह वर्ष 2026 से लेकर आगामी 4 वर्षों में भारत के चार कोनों,उत्तर में शांतिकुंज की पावन भूमि में, दक्षिण,पूर्व और पश्चिम में घोषित चार स्थानों पर

तपोनुष्ठान को संपन्न करने के बाद भारत के हृदयांचल दिल्ली में एक कार्यक्रम “पंचम पुरुषार्थ”   के रूप में संपन्न हो ।

इन कार्यक्रमों को 24 वर्षीय तप-अभियान का प्रारंभ माना जाए, समापन नहीं। भारत के इन चार कोनों पर किए जाने वाले कार्यक्रमों का आधार दिव्यता होगा, भव्यता नहीं । परमपूज्य गुरुदेव ने कहा था:

“देव संस्कृति के निर्माता यज्ञ पिता एवं गायत्री माता को आधार बनाकर,गायत्री उपासना एवं गायत्री यज्ञ को आधार बना कर इस अलौकिक पुरुषार्थ को संपन्न करने का भाव सभी के मन में उमड़ा है।”

ऐसा सोचा गया है कि भारत के चार कोनों पर होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम में 24,000 गायत्री साधकों की 30 या 40 दिवसीय तप साधना की पूर्णाहुति संपन्न हो। गायत्री साधना,पूज्य गुरुदेव द्वारा निर्दिष्ट साधनात्मक अनुशासनों के साथ ही संपन्न हो । इस अवधि में ब्रह्मचर्य आवश्यक है। जिनके लिए जितना संभव हो, उपवास करें। बालक, वृद्ध या दुर्बल प्रकृति के व्यक्ति,फलाहार या अस्वाद भोजन का प्रयोग कर सकते हैं। चमड़े की वस्तुओं का पूर्णरूपेण त्याग आवश्यक है। इस अवधि में साधनात्मक कार्यों हेतु इसी उद्देश्य एवं भावना से निर्मित वस्तुओं (माला, आसन, हवन सामग्री आदि) का   उपयोग किया जाए जिन्हें शांतिकुंज हरिद्वार के स्वावलंबन केंद्र में अहर्निश गायत्री मंत्र की ध्वनि के उच्चारण में

निर्मित किया गया है। अनुष्ठान की अवधि में अपने शरीर के लिए दूसरों की सेवा कम-से-कम लेना ही उत्तम रहता है।

जो लोग "अध्यात्मवाद की महत्ता" को स्वीकार करते हैं, पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीय माताजी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए जिनके हृदय में स्वतः संकल्प उभरता है, मात्र ऐसे ही साधकों को यह संकल्प लेना चाहिए, दिखावे के लिए नहीं। केवल युगतीर्थ शांतिकुंज,हरिद्वार में गायत्री तीर्थ होने के कारण 2,40,000 साधकों की आहुति का क्रम रखा गया है, शेष तीनों स्थानों पर 24,000 साधकों की आहुतियाँ दिए जाने का क्रम रखा गया है।

सभी जानते हैं कि यदि गायत्री उपासना भारतीय संस्कृति का मूलाधार है तो यज्ञ भारतीय संस्कृति का मेरुदंड है।

शास्त्रों में भगवान का एक नाम "यज्ञपुरुष" भी है। शतपथ ब्राह्मण की उक्ति: यज्ञो वै विष्णुः का अर्थ इसी रूप में लिया जाता रहा है। यज्ञस्य मन्त्रः वेदस्य विषयः कहने का अर्थ भी यही है कि सामान्य जीवन के हर महत्त्वपूर्ण कृत्य का आधार यज्ञ माना गया है ।

जिस तरह पाँच आहुतियों से,पंच बलियों से दैनिक बलिवैश्य यज्ञ की शुरुआत होती है, वैसे ही इन चार स्थानों पर गायत्री साधकों की गायत्री उपासना का अंश जुड़ने के साथ इस 24 वर्षीय तपोनुष्ठान की शुरुआत हो रही है। देशव्यापी गायत्री उपासकों, साधकों को एक सूत्र/श्रृंखला में जोड़कर, उनके मणिमुक्तकों को परमपूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी को समर्पित किया जाए तो इससे

बढ़कर उपहार उनकी जन्मशताब्दी पर दूसरा कोई नहीं हो सकता।

चार स्थानों पर होने वाले यज्ञीय अनुष्ठान उन साधकों के द्वारा ही संपन्न होगा जिन्होंने संकल्प पत्र भरे होंगें। अनुष्ठान संपन्न होने के बाद इन्हीं साधकों में से 24,000 ऐसे "समाज निर्माणी ऋत्वजों" का कार्यक्रम भारत के केंद्र दिल्ली में करने की योजना है जो पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के विचारों के प्रसार हेतु भ्रमण, परिश्रम, भावना संचार जैसे कठिन भार को अपने कंधे पर उठाने के लिए तैयार हों ।

उनके ज़िम्मे निम्नलिखित कार्य सौंपने का प्रस्ताव है :

(1) अपने निकटवर्ती केंद्रों में जाकर बिना किसी अपेक्षा के, गुरुसत्ता के आदेशानुसार मूक-साधक तैयार करना ।

(2) नए सदस्य, शाखाएँ, केंद्र बनाने के लिए प्रयत्न करना ।

(3) अपनी गतिविधियों की नियमित जानकारी शांतिकुंज को भेजते रहना एवं

(4) अखण्ड ज्योति स्वयं पढ़कर तथा दूसरों को पढ़ाकर, विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयत्न करना।

पंचबलियों रूपी, इस बलिवैश्य से जो महानुष्ठान प्रारंभ होगा, उसका उद्देश्य 24 वर्षीय तपोशक्ति ऊर्जा को जन्म देना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए 2026 से प्रारंभ होकर 2050 तक 108

स्थानों पर, केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के प्रत्येक कोने में-ऐसे कार्यक्रमों को आयोजित करने की योजना है जो उस क्षेत्र के जागरण का आधार बन सकें । उस स्थान की क्षमता, सामर्थ्य को देखते हुए वहाँ भाग लेने वाले साधकों की संख्या 240, 2,400 से लेकर 24,000 तक हो सकती है लेकिन ध्यान इस बात का रखा जायेगा कि संकल्प नियमपूर्वक पूर्णता के भाव से लिए जाएँ, दिखावे या प्रदर्शन के लिए नहीं। इन स्थानों पर युगचेतना को साधक बनाने के संकल्प को अतिरिक्त परिचय सत्र, प्रेम,आत्मीयता गतिविधि, प्रगति प्रस्ताव पर समीक्षा बैठकों जैसे वे सभी कार्य करने आवश्यक हो जाते हैं जिनके विषय में पहले भी अनेकों बार बोला गया है/ लिखा गया है।

अखंड दीपक के प्राकट्य, परम वंदनीय माताजी के अवतरण एवं पूज्य गुरुदेव की तप साधना के 100 वर्ष पूर्ण होने की सौभाग्यशाली घड़ी में, इस त्रिवेणी के लिए,हमारी श्रद्धांजलि इसी रूप में चढ़े, जिस रूप में गुरुसत्ता को हमसे अपेक्षा थी। साधना के आधार पर ही यज्ञाग्नि के प्रवाह में प्रचंडता आती है और वो ही प्रयास यहाँ किया जा रहा है। अपने प्रारंभिक वर्षों में अखण्ड ज्योति 500 प्रतियों के रूप में छपती थी, बढ़ते-बढ़ते वह संख्या लाखों में पहुँच गयी है । जितना कार्य हुआ है उस पर गर्व तो किया जा सकता है, लेकिन पर्याप्त नहीं माना जा सकता है। अकेले भारत की ही जनसँख्या 145 करोड़ है, गायत्री परिवार की सदस्य संख्या को देखते हुए यह कहना गलत न होगा कि एक बड़ा क्षेत्र अभी भी पूज्य गुरुदेव एव वदनीय माताजी के विचारों को सुनने-पढ़ने-जानने की

प्रतीक्षा कर रहा है। इन आध्यात्मिक आयोजनों का मूल उद्देश्य यही है कि

हरेक छूटे हुए को छुआ जाए, हरेक टूटे हुए को जोड़ा जाए, हर जुड़े हुए को जगाया जाए, हर जगे हुए को दौड़ाया जाए और हर दौड़ते हुए को लक्ष्य तक पहुँचाया जाए। दुंदुभि बज रही है,स्वरों को शक्ति मिलने लगी है, आइए तप की नींव पर रूपांतरण की भूमिका लिखना आरंभ करें।

समापन